हवा की आवाज़ सुनो

चाय के तीन कप और डॉ. ग्रेग मोर्टेंसन की कहानी

हम कोरफे के बच्चे हैं.

कुछ समय पहले हमारे यहाँ स्कूल नहीं थे और हम बाहर बैठकर ही अपने पाठ पढ़ते थे. हम जमीन पर डंडी से लिखना सीखते थे.

लेकिन तभी डॉ. ग्रेग हमारे गांव आए. उन्होंने वहां हवा की आवाज सुनी.

यह कहानी ग्रेग मोर्टेंसन की पाकिस्तान में पहले बिल्डिंग प्रोजेक्ट की है. यह उनके पूरे अविश्वसनीय अनुभव का लेखाजोखा भी है.
"थ्री कप्स ऑफ टी" गरीब देशों में स्कूलों को बढ़ावा देने के लिए एक अकेले इंसान का मिशन था. वो किताब लगातार न्यूयॉर्क टाइम्स का बेस्टसेलर रही और उसकी 12 मिलियन से अधिक प्रतियां बिकीं.

हवा की आवाज़ सुनो

चाय के तीन कप और डॉ. ग्रेग मोर्टेंसन की कहानी

हम कोरफे के बच्चे हैं. हम पाकिस्तान के एक पहाड़ी गाँव में रहते हैं. हम जो खाना खाते हैं उसे हमारे परिवार पैदा करते हैं. हमारी माएं हमारे लिए कपड़े बुनती और सिलती हैं. हम अपने खेल-खिलौने खुद बनाते हैं. हम किताबें पढ़ते हैं, और पेंसिल से लिखते हैं. अब हम उस स्कूल में पढ़ते हैं जिसे बनाने में हमने खुद मदद की थी.

स्कूल के बनने से पहले, हम बाहर खुले में पढ़ते थे. हम जमीन पर लकड़ी की डंडियों से लिखते थे.

फिर एक अजनबी हमारे गाँव में आया. वो ठंड से कांप रहा था. वो भूखा और बीमार था. हमने उसे चाय पिलाई और खाना दिया और फिर आग के पास एक पलंग पर उसे लिटाया.

अजनबी ने बताया कि उसका नाम ग्रेग मोर्टेंसन था और वो पेशे से एक नर्स था. वो अमेरिका से हमारे ऊंचे पहाड़ों पर चढ़ने के लिए हमारे इलाके में आया था, लेकिन वो अपना रास्ता भटक गया था.

जैसे-जैसे उसकी तबियत सुधरी उसने हमारे गांव के बीमार लोगों के इलाज में मदद की. लोगों ने उसे डॉ. ग्रेग के नाम से बुलाया.

कभी-कभी वो बाहर बैठकर पढ़ाई में हमारी मदद करते थे. उन्हें पता था कि हमारा टीचर सप्ताह में सिर्फ तीन बार ही आता था लेकिन हम बच्चे हर दिन पढ़ते थे.

जब डॉ. ग्रेग घर जाने के लिए स्वस्थ हुए तो उन्होंने हमारे सबसे बुद्धिमान व्यक्ति हाजी अली से कहा कि वो कोरफे के लिए कुछ विशेष करना चाहते थे. उन्होंने हाजी अली की सलाह मांगी.

हाजी अली ने डॉ. ग्रेग के प्रश्न का एक पहेली में उत्तर दिया. "हवा की आवाज़ सुनो," हाजी अली ने उनसे कहा.

डॉ ग्रेग ने अपनी आँखें बंद कीं.

गाँव की ऊंची समतल जमीन पर जहाँ हम बैठकर अपनी पढ़ाई का अभ्यास करते थे, वहां से हवा, हमारी आवाज़ को सीधे नीचे लेकर जाती थी.

डॉ ग्रेग ने हमारे पढ़ने की आवाज सुनी.

उन्होंने ठंडी हवा को अपने चेहरे पर महसूस किया और वो समझ गए.

कोरफे को एक स्कूल की सख्त जरूरत थी. डॉ. ग्रेग ने वापस लौटकर आने और हमें एक स्कूल बनाने में मदद करने का वादा किया.

एक साल बाद, हमने अपने गाँव की निचली पगडंडी पर एक आदमी को चलते हुए देखा.

वो डॉ ग्रेग थे!

हम सब उनसे मिलने नीचे उतरे.

निकटतम बड़े शहर स्कार्दू में, स्कूल बनाने के लिए डॉ ग्रेग ने लकड़ी, सीमेंट और औज़ार एकत्र किए थे. लेकिन, ब्राल्डू नदी के ऊपर, एक छोटा सी केबल-कार थी जो सिर्फ एक ही आदमी को उस पहाड़ी से हमारी पहाड़ी तक ले जा सकती थी. नदी पर कोई पुल नहीं था. और पुल के बिना, भारी भवन निर्माण सामग्री को कोरफे तक ले जाना संभव नहीं था.

इसलिए सबसे पहले लोगों ने मिलकर नदी पार करने के लिए एक पुल बनाया.

कई महीनों बाद पुल पूरा हुआ. फिर डॉ. ग्रेग और हमारे लोगों और दोस्तों ने स्कूल के निर्माण के आवश्यक सामान को लेकर मजबूत, नए पुल को पार किया.

उन्होंने चढ़ना जारी रखा. अंत में वे उस स्थान तक पहुँचे जहाँ हमने पहाड़ी को काटकर - निर्माण के लिए पत्थरों का एक ढेर इकट्ठा किया था.

हाजी अली ने ज़मीन पर ठीक उस जगह खाका बनाया जहां हमारा स्कूल खड़ा होना था. हमारी मांओं ने सीमेंट मिलाने के लिए पानी ढोया. मर्दों ने स्कूल की कक्षा की दीवारों के लिए पत्थर रखना शुरू किए.

बच्चों ने अपनी छोटी उंगलियों से पत्थरों के छोटे-छोटे टुकड़ों को सीमेंट में डाला. स्कूल की दीवारें हर दिन समतल मैदान पर उस जगह ऊपर उठीं जहाँ हम लकड़ी की डंडी से ज़मीन पर लिखते थे.
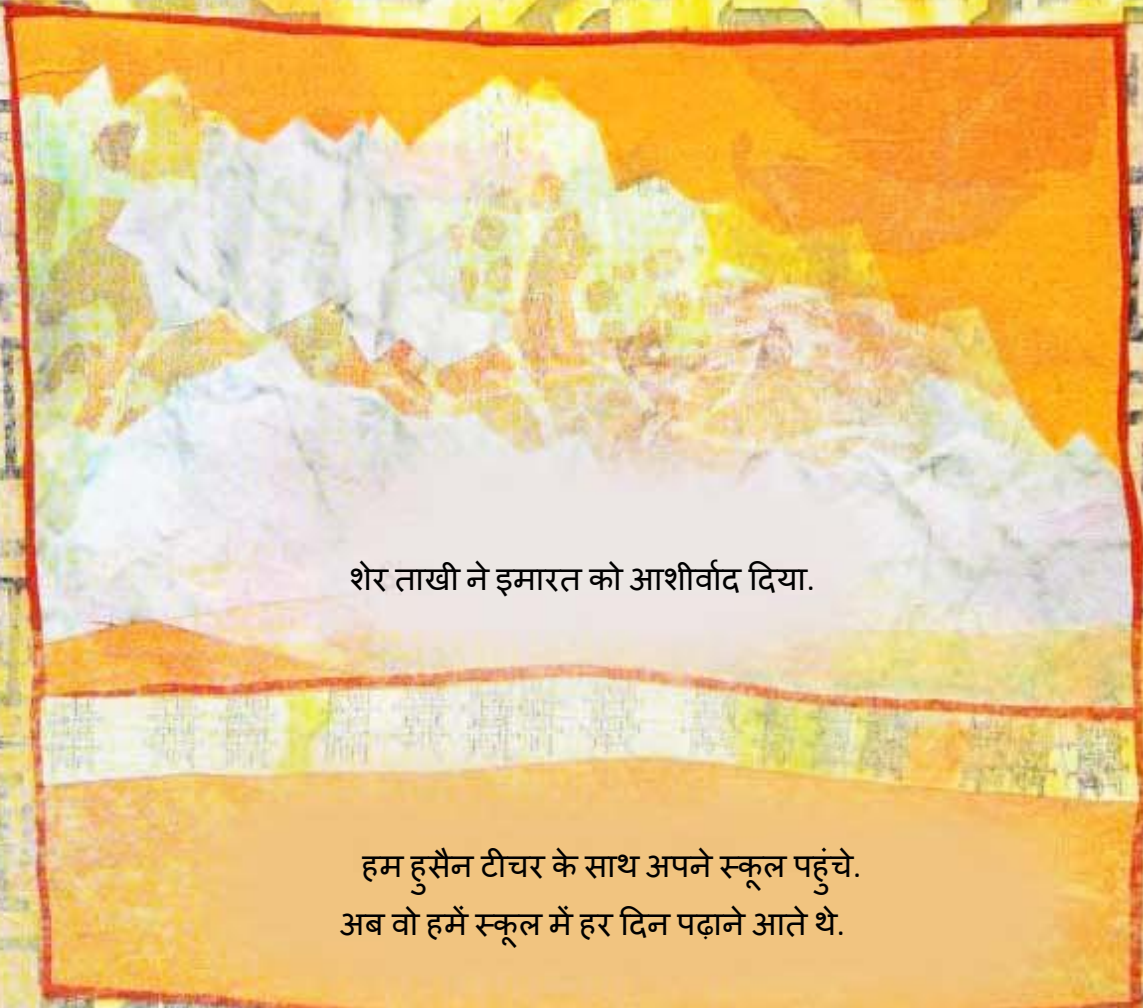
अंत में लोगों ने छत जोड़ी. उन्होंने डॉ. ग्रेग को आखिरी कील ठोकने के लिए कहा. अंत में हमारा स्कूल बनकर तैयार हुआ!

अब जश्न मनाने का समय था.

हमारे इमाम, शेर ताखी, हमारे बुद्धिमान आदमी, हाजी अली, हमारे शिक्षक, हुसैन, डॉ ग्रेग, जिन्होंने अपना वादा निभाया, जूलिया, लाइब्रेरियन जो लाइब्रेरी के लिए किताबें लाईं, आर्किटेक्ट, मज़दूर, कुली, बड़े लोग, कोरफे के बच्चे, और यहां तक कि याक, बकरियां और भेड़ सभी एक साथ हमारे नए स्कूल में चले आए.

शेर ताखी ने इमारत को आशीर्वाद दिया.

हम हुसैन टीचर के साथ अपने स्कूल पहुंचे.
अब वो हमें स्कूल में हर दिन पढ़ाने आते थे.

हम कोरफे के बच्चे हैं. हम पाकिस्तान के पहाड़ों पर एक गाँव में रहते हैं. हम उर्दू और अंग्रेजी में लिखते हैं. हम जोड़ना-घटाना सीखते हैं. हम किताबें पढ़ते हैं और अपने नक्शे पर नए देश तलाशते हैं. अब हम उस स्कूल में सीख रहे हैं जिसके निर्माण में हमने मदद की थी.

हम कोरफे के बच्चे हैं. क्या आप हमारी आवाज सुन सकते हैं?

हवा की आवाज़ को सुनें ...
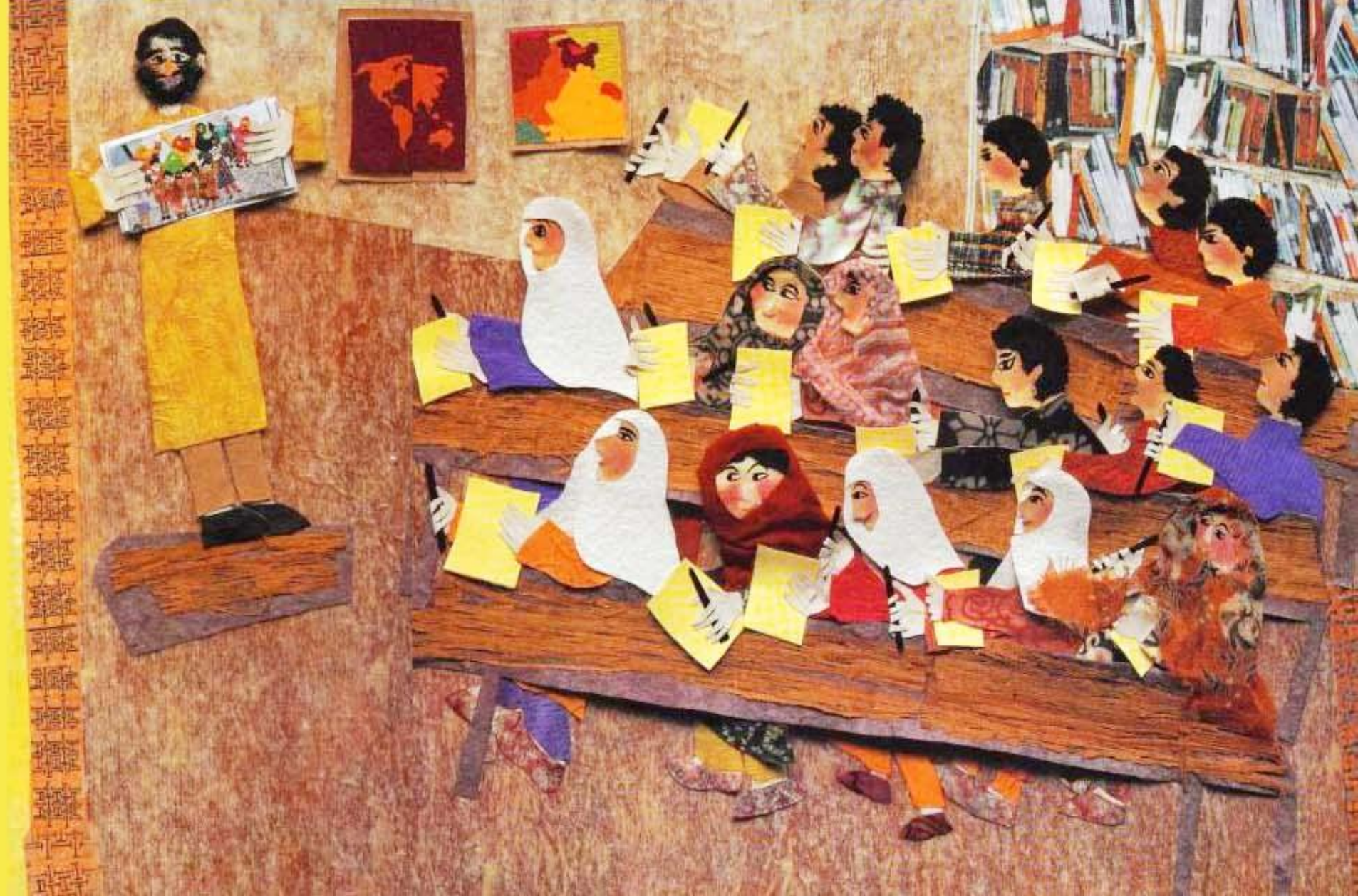
यह एक सच्ची कहानी है. ग्रेग मोर्टेंसन एक वास्तविक व्यक्ति हैं.
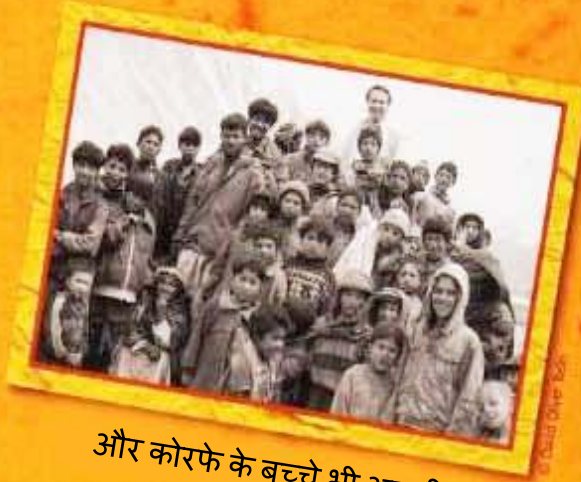
और कोरफे के बच्चे भी असली हैं.

पाकिस्तान, एशिया में एक देश है

और बाल्टिस्तान पाकिस्तान का एक क्षेत्र है. कोरफे, बाल्टिस्तान का एक छोटा सा गाँव है.
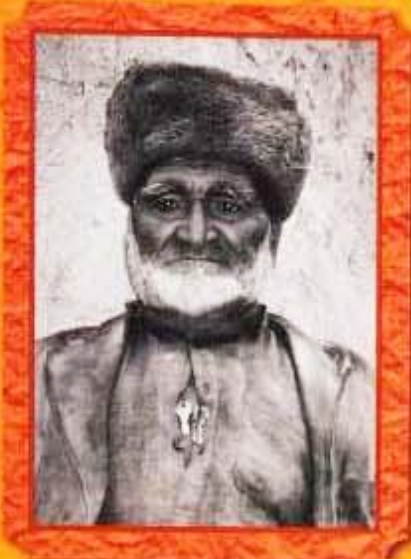
हाजी अली बुद्धिमान हैं. उन्होंने ग्रेग से "हवा की आवाज़ सुनने" को कहा था.

कोरफे के आसपास के पहाड़ काराकोरम पर्वत श्रृंखला का हिस्सा हैं.

यहाँ वो पुल है जिसे सबने मिलकर ब्राल्डू नदी पर बनाया था. वो 284 फीट लम्बा है और पानी से 60 फीट ऊपर है.

कोरफे के आदमी अठारह मील की दूरी पर निर्माण स्थल तक भारी निर्माण सामान लेकर गए. शेर ताखी उनमें सबसे आगे थे. वो गांव के आध्यात्मिक गुरु, मार्गदर्शक और इमाम थे. शेर ताखी का रोल बहुत महत्वपूर्ण था. क्योंकि पारंपरिक तौर पर इमाम मेहनत के काम में हिस्सा नहीं लेते हैं.
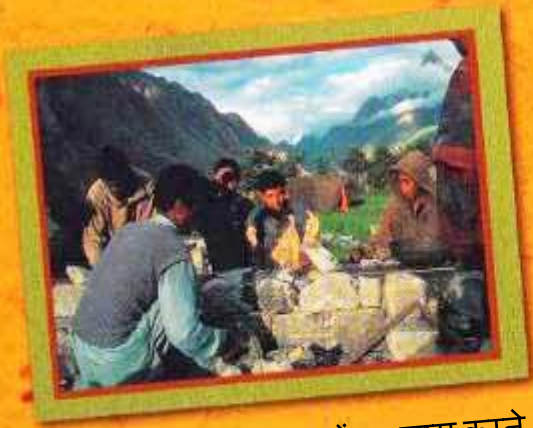
यह कोरफे स्कूल की दीवारों पर काम करने वाले कुछ मर्दों और बच्चों के चित्र हैं.
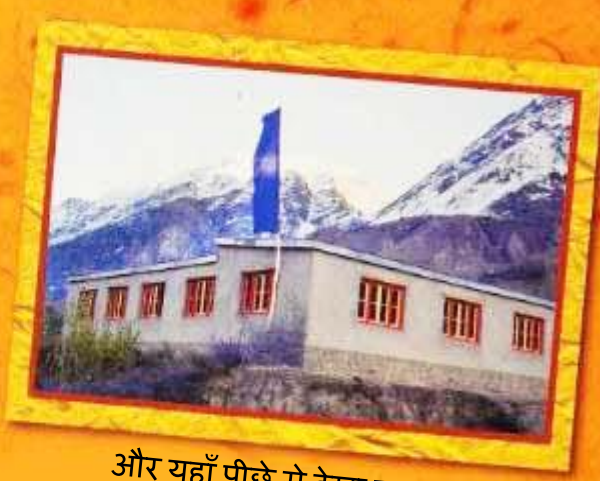
और यहाँ पीछे से देखा गया बनकर तैयार कोरफे स्कूल है.
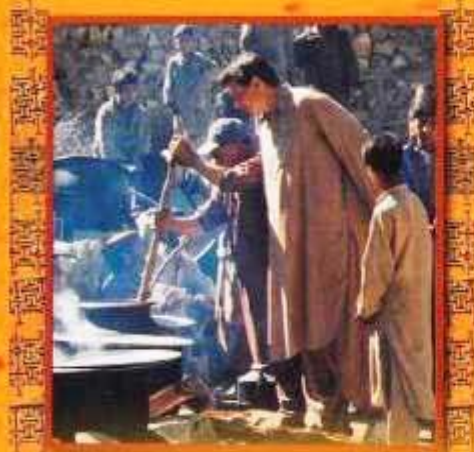
डॉ. ग्रेग ने 10 दिसंबर, 1996 को स्कूल के उद्घाटन दिवस समारोह के लिए दावत पकाने में मदद की.

फिर लाइब्रेरियन जफ़ा बर्गमैन ने स्कूल के लिए पुस्तकालय बनाने में कोरफे के टीचर हुसैन की मदद की.

डॉ. ग्रेग ने सबसे पहले कोरफे स्कूल को बनाने में मदद की थी. बाद में उन्होंने पाकिस्तान और अफगानिस्तान में 57 और स्कूल बनवाए - जैसे कि हुशे में. जूलिया बर्गमैन ने वहां किताबों की लाइब्रेरी खोलीं. टीचर्स को ट्रेनिंग दी गई और आज इन स्कूलों में लगभग चौबीस हजार बच्चे पढ़ते हैं.

स्कूलों के निर्माण के लिए बहुत मदद चाहिए होती है. प्रत्येक समुदाय योजना, सामान और श्रमदान करता है. सेंट्रल एशिया इंस्टिट्यूट, डॉ. ग्रेग और डॉ. जीन होर्नी द्वारा शुरू किया गया एक समूह, संगठन और पैसों की मदद करता है.

दुनिया भर में बच्चे सिक्के (पैनी) इकट्ठी करते हैं और दान भेजते हैं. अमेरिका में एक पैनी से एक टॉफी तक नहीं मिलती है, लेकिन पाकिस्तान और अफगानिस्तान में एक पैनी से एक पेंसिल खरीदी जा सकती है और एक डॉलर पूरे महीने के लिए एक बच्चे की स्कूल फीस होती है. यदि आप अपने पैसों से स्कूल बनाने में मदद करना चाहते हैं तो इस संस्थान से संपर्क करें. penniesforpeace.org